# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर उत्तरार्द्ध ( परीक्षा 16 जुलाई, 2017 )

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

**परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–**

**सावधान**

**1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।**

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

**जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–**

| प्रश्न क्र. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | कुल योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | | | | | | |
| पूर्णांक | 10 | 10 | 10 | 28 | 42 | 100 |
| पुनः जाँच | | | | | | |

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) देवगति और नरकगति में उत्पन्न हुआ जीव अधिक से अधिक कितने भव तक वहाँ रहता है -

(क) एक-एक (ख) दो-दो

(ग) एक-दो (घ) तीन-तीन ( )

(b) गंडं शब्द का अर्थ होता है -

(क)हैजा (ख) फोड़ा

(ग) कुत्ता (घ) गड़ा हुआ ( )

(c) सुख विपाक के चौथे अध्ययन का नाम है -

(क) धनपति (ख) सुजात

(ग) सुवासव (घ) जिनदास ( )

(d) व्यन्तरों की उत्कृष्ट स्थिति है -

(क) दस हजार वर्ष (ख) एक सागरोपम

(ग) पल्योपम से कुछ अधिक (घ) एक पल्योपम प्रमाण ( )

(e) परमाणु में नहीं होता है -

(क) वर्ण (ख) गंध

(ग) रस (घ) शब्द ( )

(f) मनुष्य जाति के प्रमुख दो भेदों में आर्य के कितने प्रकार हैं -

(क) 4 (ख) 6

(ग) 2 (घ) 5 ( )

(g) तेईस दण्डक के जीव हैं -

(क) संख्यात (ख) असंख्ययात

(ग) अनन्त (घ) उपरोक्त सभी ( )

(h) जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक की स्थिति की अपेक्षा है-

(क)एक स्थान पतित (ख) द्विस्थानपतित

(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुःस्थानपतित ( )

(i) ईसा पूर्व 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग कितने प्राकृत में लिखे गए-

(क)1000 (ख) 2000

(ग) 3000 (घ) 4000 ( )

(j) थोवं शब्द का अर्थ होता है-

(क) थोपी हुई (ख)टिकी हुई

(ग) थोड़ी देर (घ) स्थापित ( )

**प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :-** **10x1 = (10)**

(a) चतुरिन्द्रिय काय में उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात काल तक रहता है। ( )

(b) पृथ्वीकाय में उत्पन्न हुआ जीव अधिक से अधिक असंख्य काल तक रहता है। ( )

(c) सुबाहुकुमार का विवाह देवसेना प्रमुख पाँच सौ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ एक ही दिन में सम्पन्न हुआ। ( )

(d) सात पृथ्वियाँ घनवात, तनुवात और आकाश पर स्थित है। ( )

(e) सातवीं नारकी में जीव की उत्कृष्ट स्थिति तैतीस सागरोपम की है। ( )

(f) जिस जीव में जब ज्ञान होता है तब अज्ञान नहीं होता। ( )

(g) उत्कृष्ट अवगाहना (500 धनुष) वाले नैरायिक सातवीं नारकी में होते हैं। ( )

(h) मनुष्य भव में जो अवधिज्ञान लेकर उत्पन्न होते हैं, वह अवधि ज्ञान जघन्य न होकर मध्यम होता है। ( )

(i) सौरसेनी भाषा में बहुत से दिगम्बरों के साहित्य लिखे गये हैं। ( )

(j) प्राकृत भाषा में संस्कृत की तरह तीन लिंग होते हैं। ( )

**प्र.3 मुझे पहचानो :-** **10x1 = (10)**

(a) मैं स्थानांग व समवायांग का पाठी गिना जाता हूँ। .....

(b) मैं पानी से लिप्त नहीं होता हूँ। .....

(c) मैं वीरकृष्ण राजा की रानी थी। .....

(d) मैं एक ऐसा देव हूँ, जिसके सूर्य, चंद्रमा आदि पाँच भेद होते हैं। .....

(e) मैं एक ऐसा द्रव्य हूँ, जिसे संख्यात, असंख्यात और अनंतप्रदेशी माना गया है। .....

(f) मैं 'प्राकृत प्रकाश' का रचयिता हूँ। .....

(g) मैं ज्ञान-दर्शन-चारित्र, सुख, वीर्य, कर्त्ता-भोक्ता आदि लक्षण वाला हूँ। .....

(h) मैं जैन दर्शन की आधारशिला हूँ। .....

(i) मेरी सिद्धि अपरिग्रह से ही हो सकती है। .....

(j) मैं ऐसा धर्म हूँ जो जैन को जिन बनाकर आत्मा व परमात्मा के

भेद को दूर करता हूँ। .....

**प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)**

(a) आर्यत्व प्राप्त होने पर भी पाँचों इन्द्रियों की परिपूर्णता पाना अति दुर्लभ क्यों है ?

.....

.....

(b) निम्न गाथांश का अर्थ लिखिए-

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।

.....

.....

(c) चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हिंसि अणगारियं।

.....

.....

(d) समुख गाथापति के घर में कौनसे पाँच दिव्य प्रकट हुए ?

.....

.....

(e) से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेह वासे

जाव अड्ढे जहा दढपइन्ने सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ। अर्थ लिखिए।

.....

.....

(f) कौनसी चार बाते ऊपर के देवों में हीन होती जाती हैं ?

.....

.....

(g) कल्प किसे कहते हैं ?

.....

.....

(h) द्विस्थान पतित को समझाइए।

.....

.....

(I) चतुःस्थान पतित को समझाइए।

.....

.....

(j) जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से अवगाहना, स्थिति एवं वर्णादि बीस बोलों की पर्यायों की अपेक्षा तुलना कीजिए।

.....

.....

(k) गुण किसे कहते हैं ?

.....

.....

(l) 'जिण' शब्द के प्रथमा, तृतीया, षष्ठी एवं सप्तमी के रूप लिखिए।

.....

.....

(m) पढ धातु के वर्तमान काल के रूप लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(n) निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

देवो कत्थ गच्छइ .....

अहं पोत्थअं पढामि .....

**प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : -** **14x3=(42)**

(a) इइ इत्तरियंमि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।

विहुणाहि रयं पुरे कडं, समयं गोयम! मा पमायए। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(b) **एव भवसंसारे संसरइ, सुहासुहेहिं कम्मेहिं।**

**जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम। मा पमायए। गाथा का भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(c) **अवउज्झिय, मित्तबंधवं, विउलं चेव धणोहसंचयं**

**मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम! मा पमायए। गाथा का भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **अबले जहा भारवाहए, मा मग्गे विसमेऽवगाहिया।**

**पच्छा पच्छाणुतावए, समयं गोयम! मा पमायए।**

.....

.....

.....

.....

(e) **सुख विपाक सूत्र का अध्ययन करने से हमें क्या जानकारी प्राप्त होती है ?**

.....

.....

.....

निम्नांकित सूत्रों के अर्थ लिखिए-

(f) नित्याशुभतरलेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः।

.....

.....

.....

.....

(g) नृस्थिति परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते।

.....

.....

.....

.....

(h) काय प्रवीचारा आ ऐशानात्।

.....

.....

.....

.....

(i) आ आकाशादेक द्रव्याणि।

.....

.....

.....

.....

(j) जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीव की जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना एवं स्थिति की अपेक्षा से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

(k) **जघन्य अवगाहना वाले मनुष्य की जघन्य अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना एवं स्थिति की अपेक्षा से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय की जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना एवं स्थिति की अपेक्षा से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **जैन दर्शन की मौलिक विशेषताएँ बताइए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **समाधिमरण से सम्बंधित चार बिन्दू लिखिए।**

.....

.....

.....

.....